मासिक समाचार पत्र-इंदौर, अमहदाबाद, पुणे से एक साथ प्रकाशित संस्करण
वर्ष-1 अंक-6 मूल्य-5.00 रु.

हमारा संकल्प सेवा और समर्पण

हूमड़ वाणी

अंतर्राष्ट्रीय संगठन का दर्पण

सोमवार, 30 दिसम्बर 2024 फेडरेशन आफ हूमड़ जैन समाज का मुख्य पत्र

धर्म के लिए जिए, समाज के लिए जिए, ये धड़कनें, ये श्वांस हो, हूमड़ समाज के लिए

फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज (अन्तर्राष्ट्रीय संगठन)

वार्षिक साधारण सभा 5 जनवरी 2025 को तरड गांव महाराष्ट्र में सम्पन्न होगी

अध्यक्ष विपिन गांधी ने जानकारी दी, देश विदेश से हजारों हूमड़ सदस्यों के स्वागत में पलक पांवड़े बिछाए हुए तैयार है आयोजन समिति

इंदौर। महामंत्री महेंद्र बंडी ने बताया पहली बार इतनी बड़ी संख्या में अलग अलग प्रान्तो, नगरों, गांवों के सदस्य आकर आपस में समाजोन्मुख गतिविधियों पर मंथन करेगे। वर्ष 2024 की अंकेक्षित बेलेंस शीट सदन के सम्मुख प्रस्तुत किया जाकर अनुमोदित किया जाएगा। अनेक हूमड़ रत्नो को पहली बार सम्मान किया जाएगा। सभी व्यक्तिगत सदस्यों का भी बहुमान होना प्रस्तावित है।

दिनांक 9 नवम्बर 2024 को माणीक बाग जैन मंदिर में लिए निर्णय के परिपेक्ष्य में श्री हूमड़ जैन समाज,पूणे के पदाधिकारियों की शपथ विधि भी सम्पन्न होगी। प्रोविंस पदाधिकारियों के विचारों को लागू करने की योजना बनाई जाना है। भविष्य में संपादित होने वाले युवा ओं के क्रिकेट मेच की घोषणा एवं सम्मेद शिखर यात्रा का शंखनाद कर हजार से अधिक सदस्यों को लाभान्वित किया जाएगा।

सामाजिक एकता, अखंडता व सांस्कृतिक धरोहर का आदान-प्रदान किया जाएगा। सम्पूर्ण भारत केबहुमुखी प्रतिभाओं के धनी, हूमड़ जन

अपने सुविचारों से इस साधारण सभा को धन्य करने वाले हैं। उत्साह और उमंग के इस मेले के साथ तिर्थाटन का लाभ भी लेने वाले हैं।

जैनों की घटती जनसंख्या बढ़ते जिनालय-मंथन

विवाह की बढ़ती उम्र, हम दो हमारे दो, शेर का बच्चा - एक ही अच्छा, इससे भी बढ कर अपना फिगर संभालने के लिए सन्तानोत्पती से परहेज़ । सब कारण मिल कर जैन परिवार में रिश्ते दर किनारे सिमटते जा रहे हैं ।

सफलता का आकलन गुणात्मक के स्थान पर संख्यात्मक हो गया। स्कूल में अधिक नम्बर, रोजगार में अधिक पेकेज व समाज में धन अधिक होना सफलता का मापदंड हो गया । शिक्षा, व्यवसाय व नोकरी में अर्थोपार्जन मुख्य हो गया। गुणो को, संस्कार व संस्कृति को एक कौने में करते जा रहे हैं। अनेक वरिष्ठ जन अकेले जिवन यापन करने को मजबुर है। अच्छा पैकेज सिर्फ संग्रह के काम आने लगा । रिश्ते नाते बिके होते चले । कभी, कहीं मिलने का संयोग बने भी तो मोबाइल, टी वी आदि इलेक्ट्रॉनिक मिडिया ने वह समय भी चुरा लिया । एक और जनसंख्या घटती ही जा रही , दूसरी और आचार्य, मुनि भगवन्तों की प्रेरणा से नलिन मंदिरों की बाढ़ सी आ गई है ।

पहले दस-बीस सालों में पंचकल्याणक का मूहूर्त मिलता और मंदिर कुछ प्रतिष्ठा सम्पन्न होती थी । आज कल हर महिने प्रत्येक गुरु पांच दस जिनालयों की प्राण प्रतिष्ठा में प्रतिस्पर्धा रत है । सही है, जिनालय आवश्यक है, आत्म चिंतन के लिए, किन्तु हजारों वर्षों की परिकल्पना कर बनाए जाने वाले मंदिरों को संभालने , संवारने और संचालन के लिए जैन ही नहीं रहेगें तो खड़े जिन आयतन कौन सुरक्षित रखेगा ।

धर्म किसी कर्म काण्ड का पर्याय नहीं है । धर्म जीवन जीने की वैज्ञानिक शेली है। आज की आवश्यकता है मानव मंदिर बनाए । गांव से होते पलायन को रोकें, एवं जैन बढ़ावे अभियान चलिना पड़ेगा। घर वापसी गांव में रोजगार के अवसर प्रदान करेगा और परिवार नाम की संस्था, संस्कृति व संस्कार को सुरक्षित करने में सहायक होगा। आओ मिलकर मंथन करें।

यशपाल जुवां

पुणे में दिगंबर जैन हूमड़ समाज का केंद्र जरूरी

मुनि अमोघकीर्ति महाराज ने माणिक बाग में आयोजित जिला स्तरीय बैठक में व्यक्त की राय

पुणे शिक्षा का घर है और शहर में दिगम्बर जैन हुमड़ समाज की संस्कृति, शिक्षा और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनना समय की मांग है, श्री 108 मुनि अमोघकीर्तिजी महाराज ने कहा।

श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर हॉल, माणिकबाग, पुणे में आयोजित फेडरेशन ऑफ हुमड़ जैन समाज इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशन की ओर से आयोजित जिला स्तरीय बैठक में महाराजजी ने मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर महासंघ की संरक्षक नूतन शिरोमणि, महासंघ के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रविकिरण शाह को फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विपिन गांधी, राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र बंडी ने सम्मानित किया।

अमोघकीर्ति महाराजजी ने कहा कि हुमड़ समाज की स्थापना आचार्य माघनंदी महाराज के शिष्य हेमचंद्र मुनि महाराज ने की थी। हूमड़ का अर्थ है बुद्धिमान, विचारशील और साहसी गुणों वाला समाज और इस समाज ने देश को बालचंद और हीराचंद जैसे दूरदर्शी उद्योगपति दिए हैं, जिन्होंने कृषि-औद्योगिक क्रांति की।

समुदाय की आबादी केवल 1 लाख 20 हजार है। समुदाय में दसा और बीसा हुमड़ जैसे संप्रदाय हैं, लेकिन उनके 18 गोत्र एक ही है। इसलिए समाज को एकजुट करना जरूरी है। इस पार्श्वभूमि में फेडरेशन का कार्य अनुकरणीय एवं सराहनीय है। इस मौके पर हुमड़ जैन फेडरेशन इंटरनेशनल आर्गेनाइजेश के अध्यक्ष विपिन गांधी ने कहा, फेडरेशन की स्थापना वर्ष 2007 में हुई थी और वर्तमान में 4 हजार महिलाएं और 10 हजार पुरुष समाज को एकजुट करने का काम कर रहे हैं।

पुणे में एक अंतरराष्ट्रीय मानक हुमड़ केंद्र स्थापित किया जाएगा और यह दिगंबर जैन शिक्षा, संस्कृति और अनुष्ठान केंद्र, लड़कों और लड़कियों के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित छात्रावास, वृद्धाश्रम, स्वास्थ्य मंदिर, तपस्वी आवास और भोजन प्रणाली आदि प्रदान करेगा। बच्चों को छात्रवृत्ति दी जा रही है और गंभीर बीमारी के मरीजों को आपरेशन के लिए मदद दी जा रही है। उन्होंने समाज के दानवीरों से इसके लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान देने की अपील की।

इस अवसर पर श्री 108 दिगंबर मुनि अमरकीर्ति महाराज, महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र बंडी, चकोर गांधी, सुशील शाह, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष सुजाता शाह ने संबोधित किया। किरण कुमार शाह, विपिन गांधी, महेन्द्र बंडी, शकुंतला बंडी, चकोर गांधी, किशोर शाह, राजमल कोठारी, मिहिर गांधी, डॉ. श्रेणिक शाह, सुरेन्द्र गांधी, सूर्यकांत शाह, सुजाता शाह, संज्योत वोरा, चेतन शाह, बाल्हेकर, अतुल गांधी, अमृत गांधी, वीरकुमार शाह, डॉ. संदेश शाह, अक्षय दोशी आदि को उनके सामाजिक कार्यों के लिए सम्मानित किया गया।

संचालन महासंघ के पूर्व अध्यक्ष डॉ. श्रेणिक शाह ने धन्यवाद ज्ञापित कर आभार प्रकट किया।

छठी कार्यकारिणी सभा सम्पन्न

फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज की छठी कार्यकारिणी सभा गूगल मीट पर विपिन गांधी की अध्यक्षता, महेन्द्र बंडी के संयोजन तथा डॉ. श्रेणिक शाह, महेन्द्र जैन, निरंजन जुआ, वसंत दोशी के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित हुई। प्रारंभ में कौशल्या पतंग्या ने ईश वंदा की। विगत बैठक का प्रतिवेदन सभासदों ने सर्वसम्मति से पारित किया। मिहिर गांधी ने फेडरेशन के महाराष्ट्र प्रोविंस में सम्पर्क अभियान का प्रतिवेदन पढ़ा। रथोत्सव पर राजस्थान प्रोविंस की रिपोर्ट अजीत कोठिया ने पढ़ी। दशलक्षण पर्व में संपन्न 2300 लोगों द्वारा उपवास पर जानकारी धनपाल जैन सरोदा ने दी। डॉ. श्रेणिक शाह ने महाराष्ट्र से बने नए शिरोमणि, परम संरक्षक, संरक्षक तथा आजीवन सदस्यों की जानकारी दी। कौशल्या पतंग्या ने उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति पर विस्तृत जानकारी। डॉ. निधि जैन ने राजस्थान में फेडरेशन की महिला प्रकोष्ठ की गतिविधियों पर रिपोर्ट दी। दीपक भूता ने मध्यप्रदेश प्रोविंस के संपर्क अभियान पर प्रकाश डाला। सर्वसम्मति से फेडरेशन की वार्षिक आमसभा 5 जनवरी 2025 को पुणे के प्राचीन हूमड़ नगर तरडगांव में अपरान्ह एक बजे से रखी गई है। हूमड़ वाणी मासिक मुखपत्र पर सूचनाएं अजीत कोठिया ने दी। सभा को प्रमोद शाह, प्रवीण जैन, धनपाल जैन सरोदा, महेन्द्र जैन, निरंजन जुआ, वसंत दोशी, कौशल्या पतंग्या, विजय जैन, अजीत कोठिया सहित कई कार्यकारिणी सदस्यों ने संबोधित किया। संचालन विपिन गांधी ने किया। आभार महेन्द्र बंडी ने माना।

प्राचीन परम्परा रथ महोत्सव

कुशलगढ़ (राजस्थान) में जैन समाज के 300 परिवार हैं। कुशलगढ़ में दिगम्बर व श्वेताम्बर जैन समाज की बस्ती है। दिगम्बर जैन समाज शुक्ल पक्ष भादवा सुदी पंचमी से भादवा सुदी चौदस में दक्षलक्षण धर्म को धूमधाम से मनाता है। समाज के छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, बूढ़े-बच्चे सभी लोग जैन समाज के इस पर्व को हर्ष व उल्लास के साथ मनाते हैं। दक्षलक्षण पर्व क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, अकिंचन, ब्रह्मचर्य का परिचायक है। दक्षलक्षण धर्म को मनाने के पश्चात कृष्ण पक्ष अश्विन बदी अमावस्या की एकम व दूज आती है। एकम व दूज को समस्त जैन समाज तेरापंथी दिगम्बर जैन समाज व बीसपंथी दशा हूमड़ जैन समाज मिलकर रथ महोत्सव को मनाता है।

दक्षिण राजस्थान के कुशलगढ़ में सीमावर्ती गांवों में आदिवासी, भील निवास करते हैं। यह समाज आज भी जैन समाज के साथ व्यापार व आर्थिक संबंध बनाए हुए है। यहां जैन समाज के दिगम्बर व श्वेताम्बर समाज के लोग हो, वो व्यापार-वाणिज्य भील कोम के साथ करते हैं या कहें दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

इतिहास में देखने से पता चलता है कि जैन समाज के रथ यात्रा के आयोजन को बहुत ही हर्षोल्लास से देखने के लिए इलाके के आसपास की आदिवासी जनता उमड़ कर देखने आती है। इस महोत्सव की वजह से नगर में तीन दिवसीय मेला होता है। आदिवासी जनता का इस प्रकार उमड़ कर भाग लेना यह दर्शाता है कि इस महोत्सव में दर्शक के रूप में वे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आखिर होता क्या है महोत्सव?

रथ महोत्सव में जैन समाज भगवान की प्रतिमा को वेदी में स्थापित करता है और भगवान को रथ में बिठाकर धूमधाम से नाचते-गाते हुए नगर की यात्रा कराई जाती है। समाज के सभी वर्ग तबके के लोग सुन्दर वस्त्र धारण करते हैं। महिलाओं का शृंगार भी अपने चरम पर होता है। स्त्री-पुरुष सभी पारम्परिक वस्त्रों को पहनते हैं।

यह महोत्सव इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इसमें किया जाने वाला नृत्य पारम्परिक नृत्य होता है। इसे डांडियों (अंडटियों) की मदद से खेला जाता है। जिसे खेलने में सावधानी रखना होती है

मानो स्वयं देव पृथ्वी पर रमने के लिए आ गए हों। इसलिए इस महोत्सव को देव रवाड़ी भी कहा जाता है। देव रवाड़ी को देखने के लिए नगर के सभी धर्म,जाति एवं सम्प्रदाय के लोग भी आते हैं और दर्शक के रूप में अपनी भागीदारी निभाते हैं। यह त्योहार सिर्फ जैन समाज का है, ऐसा प्रतीत ही नहीं होता है। यह महोत्सव आदिवासी अंचल के कुशलगढ़कस्बे के महोत्सवों का प्राण है। कुशलगढ़के रथ महोत्सव की चर्चा प्राचीन ऐतिहासिक दस्तावेजों में भी मिलती है।

या यूं कहा जाए गैर नृत्य खेलना एक कला है। खास बात यह है कि यह नृत्य शैली एक पीढ़ी से आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित की जाती है। उनके लिए नए वस्त्रों एवं नृत्य में काम आने वाले डंडों की व्यवस्था भी बड़े उत्साह और उमंग के साथ की जाती है।

संगीत : गैर नृत्य जिस संगीत की थाप पर होता है, उसका सुर भी निराला है। इतिहास में झांकने से पता चलता है कि यह नृत्य ढोल-नगाड़ों की थाप पर होता था। ढोल-नगाड़े बाहर गांव से समाज द्वारा खरीदे जाते थे एवं उनका संरक्षण एवं वर्ष भर किया जाता था। रथ महोत्सव आने पर उन्हें निकालकर उनकी साफ-सफाई की जाती थी एवं पुनः बजाने के लिए तैयार किया जाता था। इन ढोल-नगाड़ों की थाप के साथ शहनाई बजाई जाती थी, जो आदिवासी सीमावर्ती गांव के जैन समाज के अध्यक्ष के आह्वान पर बुलाए भीलों द्वारा बजवायी जाती थी और ढोल-नगाड़ों को डंडे से समाज के अनुभवी व्यक्ति ही बजाते थे।

अश्विन सुदी एकम के दिन तेरापंथी दिगम्बर समाज महोत्सव का आयोजन करता है एवं दूज के दिन दिगम्बर जैन बीसपंथी समाज महोत्सव का आयोजन करता है। एकम एवं दूज की पहली रात्रि को जागरण रखा जाता है। जागरण से आशय अगले दिन होने वाले महोत्सव की पूर्व तैयारियां की जाए। बीज के दिन होने वाले महोत्सव के दिन जो रथ जिसमें भगवान विराजमान किए जाते हैं, वह रथ लकड़ी की सुंदर कारीगरी द्वारा बना हुआ है। उसे चांदी के आभूषणों (सोलह सपनों, झूमर, तोरण, छतर, पंचमेरू इत्यादि) से सजाया जाता है। रथ को फूलों से सजाया जाता है एवं रोशनी की व्यवस्था की जाती है। महिलाएं मंगल गीत गाती हैं एवं नृत्य करती हैं। जब रथ पूरी तरह सज जाता है, तो समस्त समाज जागरण में गैर नृत्य खेलता है। इसी बीच अल्पाहार का आयोजन भी किया जाता है, जिसमें खेलने वालों को ऊर्जा मिल सके। सम्पूर्ण दो दिन एवं दो रात्रि का यह नजारा ऐसा लगता है,

-डॉ. निधि सेठ, कुशलगढ़

बाल ब्रह्मचारिणी अलका दीदी एवं जनक दीदी की दीक्षा पूर्व गोदभराई

परम गुरू भक्त श्री रतलालाल जी खोड़निया परिवार सागवाड़ा द्वारा आज अपने निवास पर चितरी नगर गौरव बाल ब्रह्मचारिणी अलका दीदी एवं जनक दीदी की दीक्षा पूर्व गोदभराई की गई। उल्लेखनीय हैं कि दोनों ब्रह्मचारिणी दीदियों की जैनेश्वरी दीक्षा 1 फरवरी 2025 को प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री चंद्रगुप्त जी गुरुदेव के करकमलों द्वारा गजपंथा सिद्धक्षेत्र नासिक में संपन्न होने जा रही है।

महावीर इंटरनेशनल मे गौरवशाली पल : ये उपलब्धि अपनी पूजनिया दादी स्व. हणगारी बाई एवं दादा जी स्व. छबीलालजी कोठिया को समर्पित।

अजीत जी कोठिया, की सफलता उनके जुझारू स्वभाव व समर्पण का परिणाम है। इस संदर्भ में -

असफलता एक चुनौती है,
स्वीकार करो
क्या कमी रह गई,
देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो,
नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़
मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही
जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की
हार नहीं होती।

श्री पांजरापोळ गौरक्षण संस्थान करमाड़ा जि. सोलापुर की गोशाला पर फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने गोशाला के पदाधिकारियों से भेंट कर विस्तृत चर्चा की। इस गोशाला की स्थापना वर्ष 1953 में हुई थी। यहां पर 55 गायों की देखरेख संस्थान द्वारा की जा रही है।

न्यूटन ने अगर गिरते हुए सेब के साथ साथ, गिरे हुए लोग भी देखे होते तो आज ग्रेविटी के साथ साथ ह्यूमैनिटी की पढाई अच्छी हो रही होती। सारी पढ़ाई लिखाई धरी रह जाती है जब जिंदगी अपना सिलेबस बदलती है।

श्री शीतलभाई दोशी को Engineering excellence अवार्ड

हूमड़ जैन समाज रत्नों की खदान है। हमें ढुंढना और उनका बहुमान करना ही चाहिए। फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज अंतरराष्ट्रीय संगठन की अपेक्षा है कि आपकी क्षमता और ज्ञान का आंशिक लाभ हूमड़ समाज की विकासोन्मुखी गतिविधियों को मिले।

मानवता को समर्पित एक मानव मंदिर, संस्था पालवी

पालवी संस्था, पंढरपूर (महाराष्ट्र) संतो की पंढरपुर पुण्यनगरी में।

ऐसा नगर जहाँ श्रद्धा में साक्षात पांडुरंग का वास हो, समाजसेवी श्री मिहिरभाई के सहकार्य से, एक अद्भूत मानवता को समर्पित सेवा प्रकल्प पालवी को निहार कर जीवन को कृतकृत्य किया।

नरक के दुःखों की या स्वर्ग के सुखों की कथाएं बहुत पढ़ी।

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा यहाँ है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा पर भीड़ दिखी नाम वारी के प्यासो की। इन सब से परे एक मानव मंदिर के दर्शन हुए जो कल्पना नहीं साक्षात स्वरूप में विद्यमान हैं।

समाज के द्वारा उपेक्षित एचआईव्ही ग्रस्त को लाकर उन्हे मुख्य धारा से जोडा। दो समान ग्रूप के पीड़ितों का विवाह सम्पन्न करना और भी आश्चर्यजनक परिणाम संतान का सामान्य होना।

गरीबी की मारी, दुराचारियों से प्रताड़ित, ऐसे कोई नर या नारी जो जीवन से निराश हो चले, सड़कों पर, नालियों में दाने दाने को तरसते, पृथ्वी पर ही नारकीय जीवन भोगने को अविक्षिप्त हो, उन्हें सहारा देकर लाना, उचित चिकित्सा, पौष्टिक खान पान, वेश-भूषा की व्यवस्था कर पुनः समाज में सम्मान से जीने का हौसला देना। रोजगार उत्पन्न करना क्या कुछ नहीं?

माता-पिता की तरह पालन ही पालवी की सार्थकता है।

भावावेश में दुराचारियों के विकृती का परिणाम, अवैध संतान जो भगिनी कहीं निर्जन स्थान पर छोड़ जाती है, उन्हे ममत्व की छांव देना, **कोमल शिशु को पलक पांवड़े पर पालने का नाम है पालवी।**

किसी महा बलिदानी मानव (मंगल ताई) ने कल्पना कर बिंदु से रेखा और रेखा से आकृति गढ़ी। प्यार, करूणा, मानवता, दया, सेवा, समर्पण, साहस के सप्त रंगों के माधुर्य का रंग भरा मंगलताई के अंतरंग के तारों से। मन की वीणा झंकृत हुई और जो स्वर लहरियाँ बिखेरती चली, धरती, आकाश गुंजायमान है और देवता भी आरती उतारते हैं, इस अनुपम रचना पालवी की।

भिक्षा वृत्ति को रोकना, बेसहारा वृद्धों को सहारा देना।

शिशुओं को शिक्षा-दीक्षा, वयस्कों में स्वावलंबन का सामर्थ्य पुनर्निर्माण करना और अर्जित आय को उन्हीं के ही बैंक खाते में जमा करवाना।

बात यहीं, अभी थमी नहीं। गौशाला में पशुधन की सुरक्षा, पंछियों को आश्रय। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश अर्थात पंच तत्वों को सहेजना, रच बस गया है, यहाँ के वातावरण में। ज्ञानवर्धक कार्यशालाएँ आयोजित करना।

प्रश्न यह सब होता कैसे? करुणा की मन्दाकिनी कहाँ से निकली और कौन इसके तट बनकर सतत प्रवाहमान रख रहें हैं? इसके साथ हमारा क्या दायित्व है?

'प्रभा हिरा' प्रतिष्ठान के नाम से एक बीज अंकुरित हुआ जो आज वट वृक्ष के रूप में छाया हुआ है। इसे खाद, बीज, पानी देना और संजोना इतना आसान नहीं था। लेकिन दृढ़निश्चय की धारी (शायद ईश्वर ने मानवता के लिए ही जिसे घड़ा हो) ऐसी मंगलताई ने अपने कोमल हाथों से लेकिन मजबूत विश्वास के साथ खड़ा किया।

लिखते हुए मन में संवेदना के भाव इतने गहरे हो गए की आँखें छलछला आई। पता नहीं यह करुणा का नीर था अथवा मानव सेवा की इस बेमिसाल कृति पर मन अल्हादीत था।

मंगलताई की सुपुत्री डिंपल ताई उनके पति एवं पुत्र-पुत्री सभी परिवार इस मंगलयज्ञ में अपना योगदान दे रहे हैं।

लगातार तीन पीढ़ी का समर्पण अद्भुत अकल्पनीय प्रतीत होता हैं। अतः परोक्ष/अपरोक्ष रूप से उन्हें नमन करने के भाव उत्पन्न होते हैं।

प्रत्येक मानव जिसे मानवताओं की संवेदना का स्पर्श होता हो उसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार इस प्रकल्प में अपना योगदान प्रदान करना चाहिए।

पालवी जैसी संस्थाओं को बड़ी करना आवश्यक हो गया है, परंतु इससे भी अधिक आवश्यकता है समाज में पनप रही विसंगतियों के विचारों को दूर करके हमारी मानसिकता में सुधार लाना। आओ भगवान महावीर को याद करें। प्राणी मात्र से प्रेम करें। कुरीतियों के अभिशाप से मुक्त होकर मानव मंदिर का निर्माण करें।

महेन्द्र बंडी, इंदौर

!! हे परमेश्वर !!

कोई भी आवेदन नहीं किया था, किसी की भी सिफारिश नहीं थी, फिर भी सिर के बालों से लेकर पैर के अंगूठे तक 24 घंटे भगवान, आप रक्त प्रवाहित करते है... जीभ पर नियमित अभिषेक हो रहा है...निरंतर आप मेरा ये हृदय चला रहे है...चलने वाला ये कौन सा यंत्र आपने फिट कर दिया है हे भगवान...पैर के नाखून से लेकर सिर के बालों तक बिना रुकावट संदेशवाहन करने वाली प्रणाली...किस अदृश्य शक्ति से चल रही है कुछ समझ नहीं आता।

हड्डियों और मांस में बनने वाला रक्त कौन सी अद्वितीय संरचना है...इसका मुझे कोई अंदाजा नहीं है। हजारों प्रकार की गंध की सटीक पहचान करने वाली अनोखी नासिका। हजार-हजार मेगापिक्सलवाले दो-दो कैमरे दिन-रात सारे दृश्यें कैद कर रहे हैं। दस-दस हजार टेस्ट करने वाली जीभ नाम की टेस्टर, अनगिनत संवेदनाओं का अनुभव कराने वाली त्वचा नाम की सेंसर प्रणाली...और अलग-अलग फ्रीक्वेंसी की आवाज पैदा करने वाली स्वर प्रणाली और उन फ्रीक्वेंसी का कोडिंग-डीकोडिंग करने वाले कान नाम का यंत्र...पचहत्तर प्रतिशत पानी से भरा शरीर रूपी टैंकर हजारों छेद होने के बावजूद कहीं भी लीक नहीं होता...स्टैंड के बिना मैं खड़ा रह सकता हूँ...गाड़ी के टायर घिसते हैं, परंतु पैर के तलवे कभी नहीं घिसते।

अद्भुत ऐसी रचना है, भगवान आपकी। देखभाल, स्मृति, शक्ति, शांति ये सब भगवान आप ही देते है। आप ही अंदर बैठ कर यह शरीर चला रहे है। अद्भुत है यह सब, अविश्वसनीय, अबूझ, अतुलनीय। ऐसे शरीर रूपी मशीन में हमेशा भगवान आप ही हो, इसका अनुभव कराने वाली आत्मा भगवान आपने ऐसा कुछ फिट कर दिया है कि और क्या आपसे मांगू ...आपके इस जीवाशिवा के खेल का निश्छल, निस्वार्थ आनंद का हिस्सा रहूँ!...

ऐसी सद्बुद्धि मुझे दे!! आप ही यह सब संभालते है इसका अनुभव मुझे हमेशा रहे!!! रोज पल-पल कृतज्ञता से आपका ऋणी होने का स्मरण, चिंतन हो, यही परमेश्वर के चरणों में प्रार्थना है!

श्रीमती पुष्पादेवी विमलचंद जी गांधी की स्मृति में चिकित्सा कोष की स्थापना

श्री हूमड़ जैन समाज ट्रस्ट इन्दौर के संरक्षक श्री विमल चंद जी गांधी की जीवन संगिनी , अ.रा.फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपिनजी गांधी की मातुश्री का अरिहंत शरण दिनांक 19 -12 - 2024 को समाधि पाठ के चिंतन के साथ ब्रह्म बेला मैं हो गया। उठावना मैं सहस्त्राधिक समाज जन एकत्रित हुए । इस अवसर पर गांधी परिवार ने मातुश्री का नेत्र एवं चर्म दान कर मानव सेवा के यज्ञ में आहुति अर्पित की । परिवारजनों ने मातुश्री की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए प्रतीक स्वरूप 6 लाख 51 हजार दान राशि की घोषणा की। प्रमुख रूप से 5 लाख रुपए का एक चिकित्सा कोष श्रीमती पुष्पा देवी विमलचंद जी गांधी चिकित्सा कोष हेतु अ.रा.फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज को देने की घोषणा की।

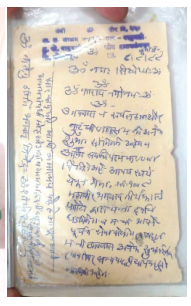

श्री आनंद कुमार (पोपटलाल) रामचंद शाह, पनादारे जिला पुणे ने फेडरेशन ऑफ हुमड़ जैन समाज अंतरराष्ट्रीय संगठन पदाधिकारी श्री विपिन गांधी, श्री महेन्द्र बंडी, श्री मिहिर गांधी, डॉ. रवि किरण को अपने घर पर गृह मंदिर के दर्शन कराए। यहां पर वर्ष 1970 से 1988 तक गुरुदेव सामंतभद्रजी महाराज का हस्तलिखित पत्र व्यवहार उपलब्ध था।

फक्त जैन युवक-युवती नि:शुल्क (मोफत) परिचय संमेलन

रजिस्ट्रेशन नंबर :- महा-५५३/२०२०/पुणे

॥ मधुर-मीलन ट्रस्ट, पुणे ॥

सकल जैन पंथ -जाती - उपजाती विवाहेत्सुक युवक-युवती तसेच पुर्न:विवाहितांसाठी परिचय संमेलन

शनिवार दि. ४ जानेवारी २०२५ सकाळी ९.०० ते सायं. ६.००

कार्यस्थळ: सौ. लता रमेश शहा सांस्कृतिक भवन, मु. पो. तरडगांव, ता. फलटण, जि. सातारा ४१५५२८

हूमड़ जैन समाज इतिहास के पन्नों से

हूमड़ अधिकांश संख्या में गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश में है। शेष भारत में इनकी संख्या अत्यल्प है। इन सभी के पूर्वज खेड़ब्रह्मा तथा उसके आसपास के निवासी थे तथा मूलतः क्षत्रिय थे।

यहा से इनका निष्क्रमण विभिन्न समय में हुआ तथा वे विभिन्न स्थानों पर जा बसे। वे और उनकी पीढ़ियां किसी एक स्थान पर स्थाई रूपसे नही रही। यह बताना कठिन है कि किस परिवार ने कितने और कब स्थान बदले और वर्तमान पीढ़ी के पूर्वज कब वर्तमान स्थान पर बसे। हूमड़ों के खेड़ब्रह्मा से निष्क्रमण के सम्बन्ध में एक किवदन्ति प्रचलित है कि एक भीलराजा के समय राजपुत्र तथा नगर के श्रेष्ठि पुत्र में घनिष्ठ मित्रता थी।

राजपुत्र के पास घोड़ा तथा भीलपुत्र के पास घोड़ी थी। एक दिन दोनों घूमने निकले। राजपुत्र ने दौड़ का प्रस्ताव किया। श्रेष्ठि पुत्र इसके लिये तैयार नहीं था परंतु राजपुत्र के आग्रह को टाल नहीं सका। नही चाहते हुए भी राजपुत्र का प्रस्ताव स्वीकार किया, दौड़ शुरू हुई। श्रेष्ठी पुत्र की घोडी तेज तर्राट तथा बलिष्ठ थी अत : वह आगे निकल गयी। अकेला पड़ जाने के कारण राजपुत्र का घोडा गिर गया तथा राजपुत्र को नीचे गिरा दिया। इस घटना के कारण राजपुत्र ने श्रेष्ठि पुत्र की घोड़ी खरीद लेने को कहा। राजा ने श्रेष्ठि को बुलाकर बात की। श्रेष्ठि ने कहा आपका पुत्र एवं मेरा पुत्र दोनो घनिष्ठ मित्र है वे ही आपस में तय कर लेगें। श्रेष्ठि पुत्र को बुलाया गया।

उसने कहा 'राजन्' आज तो मेरी घोड़ी मांगी जा रही है कल को अगर राजपुत्र मेरी पत्नी मांगेगा तो क्या मैं उसे दे दूंगा ? नही कदापि नही। यह बात राजा को तीर के समान चुभ गई। उसने सभी जैनियों (श्रेष्ठि) को बंदी बनाने का आदेश दिया तथा उन्हें जेल में डाल दिया। तब एक – एक ब्राह्मण ने दो – दो श्रेष्ठियों को जमानत देकर उन्हें जेल से छुड़वाया। इस घटना से उत्पीड़ित जैन एवं ब्राह्मण समाज के बुद्धिजीवियों ने सलाह मशवीरा कर खेड़ब्रह्मा छोड़ देने का निश्चय किया।

खेड़ब्रह्मा छोडने का एक अन्य कारण राजाओं के आपसी युद्ध तथा म्लेच्छ शासकों के आक्रमण भी रहे हैं। खेड़ब्रह्मा और उनके आसपास के क्षेत्र (रायदेश) तीन तरफ ईडर सत्तर तालुका खड़ग क्षेत्र के पहाड़ो से घीरा हुआ होने से चित्तौड़ पर आक्रमण करने की दृष्टि से तैयारी करने हेतु सुरक्षित था।

अतः इस क्षेत्र पर आक्रमण कर इसे अधिनस्थ करने का प्रयास किया गया। इन आक्रमणों से मन्दिर एवं भवन खण्डित कर दिये गये तथा लोग जिनमें जैन भी सम्मिलीत थे खेड़ब्रह्मा छोड़कर गुजरात के अन्य क्षेत्रों, दक्षिणी राजस्थान के मेवाड़, वागड़, खडक, मध्यप्रदेश के मालवा – इन्दौर, महाराष्ट्र के फल्टन, पूना, शोलापुर तथा आजादी के बाद से व्यापार के लिए कर्नाटक, तमिलनाडू तथा विदेशों तक जा बसे।

हूमड़ पुराण के मंगलाचरण की पंक्तियों से ज्ञात होता है कि हूमड़ों के पूर्वजों का मूलनिवास स्थान गुजरात, जिसे प्राचीन समय में लाट देश कहा जाता था, के साबरा कांठा जिला मुख्यालय से 65 किलो मीटर दूर खेड़ब्रह्मा (प्राचीन ब्रह्म / देवपुरी) तथा उसके पास से बहने वाली हिरण्य गंगा के गाँव जिन्हें वर्तमान में रायदेश कहा जाता है, में था। ये लोग खेड़ब्रह्मा से 50 कि.मी. की परिधि में बसे हुए थे।

उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार पौराणिक कालमें खेडब्रह्मा एक समृद्ध शहर था तथा त्रिवेणी (काशाम्बी, मौमशकरी और हिरण्य गंगा) संगम स्थल होने से प्रसिद्ध तीर्थ स्थल था। वहाँ के क्षत्रिय लाट देश (गुजरात) के निवासी होने से लाडवंशी कहे जाते थे। इनके मुख्य कुल चौहान, चाणक्य, प्रतिहार और परमार थे। ये कुल, उपकुलों तथा शाखाओं में बटे हुए थे।

इनमे से कई क्षत्रियों ने परिस्थितिवश क्षत्रिय संस्कारों का त्याग कर आजीविका हेतु वैश्य कर्म (व्यापार) अपना लिया। ऐसे क्षत्रियों को लाइवणिक भी कहा जाता था। वहाँ के कई क्षत्रिय एवं वैश्य (पूर्व में क्षत्रिय) जैन धर्म के आचार – व्यवहार का पालन करते थे और पंच णमोकार मंत्र, देवपूजा, गुरूपूजा, स्वाध्याय, सामायिक एवं पात्रदान यज्ञ को मानते थे। क्षत्रिय द्वारा जैन धर्म पालन के कारण नन्दी संघ के मुनियों द्वारा प्रभारी प्रचार था।

जब नन्दी संघ के आचार्य मागनन्दी के शिष्य मुनि हेमचन्द्र खेड़ब्रह्मा पहुंचे तब इन्होंने आसपास के जैन मतावलंबियों एवं अन्य क्षत्रियों तथा वैश्यों को संगठित कर एक नये समाज की स्थापना की जो आज हूमड़ समाज के नाम से जाना जाता है। इन्होंने हूमड़ों के 18 गौत्र निर्धारित किये तथा क्षत्रियों के विविध संस्कारों को सम्पन्न कराने वाले पुराहितों को ' खेडुवा ' नाम दिया और उनके 9 गोत्र स्थापित किये।

खेडब्रह्मा में नये समाज के संस्कार स्थल पर आज भी विशाल गोत्र कुण्ड (बावड़ी) है जिसमें हूमड़ों के 18 गोत्र की मातृवेदियों के गोखले (मूर्ति स्थान) मौजूद हैं।उपरोक्त अध्ययनों से हूमड़ समाज का उत्पत्ति वर्ष विक्रम संवत् 101 के लगभग निश्चित होना प्रतीत होता है।

वर्तमान खेड़ब्रह्मा के निकट देरोल नामक स्थान है, (जो पूर्व में खेड़ब्रह्मा का ही भाग था), में नन्दीश्वर बावन जिन चैत्यालय एवं अन्य जैन मन्दिर के खंडर मौजूद है। वहाँ की 150 से अधिक प्रतिमाएं आज भी ईडरगढ़, तारंगातीर्थ, भीलूडा तथा राजस्थान के अनेक स्थलों पर उपलब्ध है।

श्री हुमड़ समाज प्रगति संघ अहमदाबाद

महिला प्रीमियर लीग (HMPL)

श्री हुमड़ समाज प्रगति संघ, अहमदाबाद, 29 दिसंबर 2024 को हुमड़ महिला प्रीमियर लीग (HMPL) Night Box Cricket Tournament का आयोजन कर रहा है यह अनोखी क्रिकेट प्रतियोगिता महिलाओं में खेलभावना, एकता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित की जा रही है। इस टूर्नामेंट में 6 टीमें हिस्सा लेंगी, और इस टूर्नामेंट को श्री विक्रम तलाटी द्वारा स्पोन्सर किया गया है। साथ ही, टीमों को समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा स्पॉन्सरशिप ली गई है :

टीमों का नेतृत्व करने वाली : हेमांगिनी वैभव शाह, रीना पारस गांधी, निकेता विपुल फडिया, बरखा अनुराग मेहता, अंतिम अभिषेक गांधी, खुशबू ऋषभ गांधी।

कुल 66 महिलाएं इसमें खेलेंगी! सभी कप्तान और टीम मालिक अपनी-अपनी टीमों को हर संभव सहायता प्रदान कर रहे हैं और खिलाडियों के लिए नियमित अभ्यास सत्र आयोजित कर रहे हैं। खिलाड़ियों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है, और हर खिलाड़ी इस भव्य आयोजन को सफल बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देने का प्रयास कर रही है।

HMPL सिर्फ एक क्रिकेट टूर्नामेंट नहीं है, यह श्री हुमड़ समाज प्रगति संघ अहमदाबाद का ऐसा आयोजन है जो सशक्तिकरण, टीम भावना और समाज के बीच एकता को बढ़ावा देता है। श्री हुमड़ समाज प्रगति संघ, अहमदाबाद, सम्पूर्ण भारत के समाज सदस्यों से अनुरोध करता है कि वे इस तरह के टूर्नामेंट का आयोजन करे और समाज मैं महिला सशक्तिकरण और टीम भावना को बढ़ावा दे ।

हुमड़ प्रीमियर लीग-13 नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट

श्री हुमड़ समाज प्रगति संघ, अहमदाबाद, हुमड़ प्रीमियर लीग (HPL-13) नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट के आयोजन है, जो 11 और 12 जनवरी 2025 को आयोजित किया जाएगा। 2010 में शुरू हुई यह वार्षिक परंपरा हुमड़ समाज में एकता और युवाओं की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने का प्रमुख आयोजन बन चुकी है। पिछले वर्षों में 175 से अधिक हुमड़ समाज अहमदाबाद के सदस्य इस प्रतिष्ठित लीग में भाग ले चुके हैं, जिससे समाज के सभी सदस्यों के बीच आपसी संबंध मजबूत हुए हैं।

HPL-13 टूर्नामेंट में इस बार 72 खिलाड़ी भाग लेंगे। कुल6 टीमें, जो श्री हुमड़ समाज प्रगति संघ अहमदाबाद के प्रतिष्ठित व्यक्तियों और कंपनियों द्वारा प्रायोजित हैं, खिताब के लिए मुकाबला करेंगी। इस सीज़न का आयोजन टुडेज़ ग्रुप (श्री राजेशभाई शाह) द्वारा प्रायोजित है, जिनके उदार समर्थन ने इस आयोजन को संभव बनाया है।

टीमों का नेतृत्व : मयूर दोशी, वैभव शाह, ध्रुविक जुथावत, ईशान कोडिया, दिशांत कोडिया, जय मेहता करेंगे।

यह टूर्नामेंट केवल एक खेल आयोजन नहीं है, बल्कि यह हुमड़ समाज के सदस्यों को एक साथ लाने, अपनी प्रतिभा दिखाने और सामुदायिक भावना का उत्सव मनाने का अवसर है।

मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान
श्री हुमड़ जैन समाज ट्रस्ट, इंदौर

हुमड़ जैन समाज के 130 मेधावी विद्यार्थियों को गोल्ड व रजत पदक एवं अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अमेरिका निवासी श्री अरिवंदजी दिलीपजी बोबड़ा एवं मुख्य वक्ता श्री अजयजी कोरिया थे।

दो विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक, 9 विद्यार्थियों को रजत पदक, 3 विद्यार्थियों को विशेष सम्मान से सम्मानित किया गया। साथ ही समाज के कक्षा 1ली से 12वीं तक एवं तकनीकी तथा अन्य विषयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम शिक्षा समिति के संयोजक श्री महावीरजी बागड़िया एवं श्री मनोजजी बोबड़ा रहे। चेयरमैन श्री श्रेणिक बंडी ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। यह जानकारी समाज अध्यक्ष श्री पवन बागड़िया ने दी।

श्री हूमड़ जैन समाज ट्रस्ट, इंदौर के नवसज्जित श्रीमती अनिता विजय रामावत हूमड़ जैन समाज भवन का उद्घाटन एवं लोकार्पण दो दिवसीय गरिमामय समारोह में सम्पन्न हुआ।

श्री हूमड़ जैन समाज ट्रस्ट, इंदौर का परिचय एवं स्नेह सम्मेलन

परिचय सम्मेलन द्वारा श्रेष्ठ विकल्प चुनने का अवसर प्राप्त होता है एवं स्वजातीय विवाह को भी प्रोत्साहित करता है। स्थानीय लता मंगेशकर सभागार में श्री हूमड़ जैन समाज ट्रस्ट द्वारा आयोजित 15वें परिचय सम्मेलन में मुंबई निवासी श्री शैलेष बंडी ने उक्त उद्गार व्यक्त किए। अध्यक्ष श्री पवन बागड़िया एवं सचिव भरत पाडलिया ने बताया कि कुल 800 प्रविष्टियां प्राप्त हुई हैं। संयोजक संजय तराटी ने इस अवसर पर परिचय पुस्तिका का विमोचन मंदसौर के उद्योगपति श्री शरद गांधी द्वारा कराया। दिल्ली के प्रबंधन गुरु श्री पीयूष जोशी मुख्य अतिथि ने समाज के सभी व्यक्तियों को जोड़ने एवं उनमें आत्मीयता की वृद्धि करने हेतु बधाई दी। ईडर श्री महावीरजी जोशी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। संपादक श्री राजकुमारजी बंडी एवं रजनीकांत गांधी ने परिचय पुस्तिका का विमोचन कराया। श्री शरद पाणोत, श्रीमती रूबी बंडी ने संचालन किया। अंत में रंगारंग अंताक्षरी का आयोजन कर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संपादक-श्री यशपाल जुवां-9826097101, email : humadwani2024@gmail.com प्रकाशक एवं मुद्रक श्री महेन्द्र बंडी (राष्ट्रीय महामंत्री) 9827255910 सन्मति 29/3, स्नेहलतागंज, इंदौर (म.प्र.), फेडरेशन ऑफ हुमड़ जैन समाज, पंजीकृत कार्यालय-9, सिंदुर कॉ.-ऑप., हाउसिंग सोसायटी, ईश्वर भवन के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) 380014-अहमदाबाद- से मुद्रित एवं प्रकाशित।